हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

HL-B-DTVF-17

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक: 250 *Maximum Marks: 250*

नाम (Name): Ratan Sah Gupta

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | ✓ | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.): _____

ई-मेल पता (E-mail address): _____

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): _____

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]: | | | | | | | |

विद्यार्थी के हस्ताक्षर
(Student's Signature): Ratan Sah Gupta

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided into two **SECTIONS**.*

*Candidate has to attemp **FIVE** questions in all.*

*Questions Nos. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, **THREE** are to be attempted choosing at least ONE from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answers must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Word limit in questions, if specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum- Answer book must be clearly struck off.

Attempts of questions shall be counted in chronological order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly.

लिखे गए उत्तर अच्छे हैं।
पूरा प्रश्नपत्र हल करने का
प्रयत्न किया है।

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 123 टिप्पणी (Remarks): _____

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'A'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजिए: $10 \times 5 = 50$

(क) दीपक दीया तेल भरि, बाती दई अघट्ट।
पूरा किया बिसाहना, बहुरि न आँवौं हट्ट।।

संदर्भ एवं प्रसंग:

प्रस्तुत काव्यांश संतकविशिरोमणि कवि कबीरदास जी द्वारा रचित है। यह साखी डा. श्यामसुन्दरदास जी द्वारा संकलित 'कबीर ग्रंथावली' के 'गुरु को अंग' से ली गई है।

कबीरदास जी 'गुरु की महिमा' का वर्णन करते हुए इस साखी में उन्हें अपने भवसागर से मुक्ति में मार्ग बताने वाले के रूप में व्याख्यायित कर रहे हैं।

व्याख्या:

कबीरदास जी कहते हैं कि उनके गुरु ने उनके शरीर में दीपक के समान ज्ञान रूपी तेल भर दिया है। दीपक की बाती

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भी ऐसी है कि वह कभी छूटेगी नहीं। कब से वे ज्ञान के प्रकाश के लिए लालायित थे परन्तु उन्हें अब इस जीवनरूपी बाजार में बार-बार नहीं आना पड़ेगा।

उन्होंने अब इस भवसागर से मुक्ति पा ली है, आने-जाने का चक्र समाप्त हो गया है और यह सब उनकी सतगुरु की कृपा का ही परिणाम है।

भावगत एवं काव्यगत सौन्दर्य :-

1. कबीर ने गुरु की तुलना अन्यत्र भी ईश्वर से करते हुए "गुरु गोविन्द दोऊ खड़े" के माध्यम से किया है।
2. कबीर का धार्मिकपक्ष भी प्रकट होता है।
3. भाषा सधुक्कड़ी परन्तु प्रवाहपूर्ण एवं सरस है।
4. रूपक अलंकार का भी प्रयोग दृष्टव्य है।
5. कबीर की लक्षणा शक्ति के दर्शन भी होते हैं।

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) प्रकृति जोई जाके अंग परी।
स्वान पूँछ कोटिक जो लागे सूधि न काहु करी।।
जैसे काग भच्छ नहिं छाँड़ै जनमत जौन घरी।
धोये रंग जात कहु कैसे ज्यों कारी कमरी?
ज्यों अहि डसत उदर नहिं पूरत ऐसी धरनि धरी।
सूर होउ सो होउ सोच नहिं, तैसे हैं एउ री।।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थ
संख्या के अति
न लिखें।
(Please do
anything ex
question nu
this space)

संदर्भ एवं प्रसंग :

प्रस्तुत काव्यांश भक्तिकालीन कृष्ण काव्यधारा के शिरोमणि कवि सूरदास जी द्वारा रचित एवं आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा संकलित 'भ्रमरगीतसार' नामक संकलन से उद्धृत है।

प्रस्तुत काव्यांश में गोपियाँ उद्धव को उलाहना देते हुए अपना रोष व्यक्त कर रही हैं।

गोपियाँ कहती हैं कि कहीं किसी व्यक्ति या पदार्थ की प्रकृति बदलती है क्या? वे कहती हैं कि करोड़ों बार भी सीधा करने पर कुत्ते की पूँछ सीधी नहीं होती है।

इसी प्रकार वे कौए के भक्षण की

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मूल प्रवृत्ति एवं काले कम्बल के रंग न जाने को भी अपनी उलाहना का आलम्ब बनाती है।

फिर गोपियाँ पेट एवं धरती का अलम्ब लेते हुए अपनी उलाहना को और तीव्र करती है।

काव्यगत एवं भावगत सौन्दर्य :-

(1) गोपियों के रोष को ~~रोष को~~ सूरदास जी ने "कुब्जा को पटरानी कीन्हों, हमहिं सिखावत जोग" के माध्यम से भी व्यक्त किया है।

(2) भाषा प्रवाहपूर्ण एवं सरल ब्रजभाषा है।

(3) उपमा अलंकार की सुन्दर प्रस्तुति की गई है।

(4) नाद सौन्दर्य भी दृष्टव्य है।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) जेठ जरै जग वहै लुवारा। उठै बवंडर धिकै पहारा।
बिरह गाजि हनिवंत होइ जागा। लंका डाह करै तन लागा।
चारिहुँ पवन झँकोरै आगी। लंका डाहि पलंका लागी।
दहि भइ स्याम नदी कालिंदी। बिरह कि आगि कठिन असि मँदी।
उठै आगि औ आवै आँधी। नैन न सूझ मरौं दुख बाँधी।
उधजर भई माँसु तन सूखा। लागेउ बिरह काग होइ भूखा।
माँसु खाइ अब हाड़न्ह लागा। अबहूँ आउ आवत सुनि भागा।
परबत समुंद मेघ ससि दिनअर सहि न सकहिं यह आगि।
मुहमद सती सराहिअै जरै जो अस पिय लागि।।

संदर्भ एवं प्रसंग :-

प्रस्तुत काव्यांश सूफी काव्यधारा के शिरोमणि कवि एवं अवधी के अरधान ओर जाने वाले मलिक मुहम्मद जायसी द्वारा रचित 'पद्मावत' के 'नागमती वियोग खंड' से उद्धृत है।

प्रस्तुत काव्यांश में नागमती के वियोग वर्णन की अतिमार्मिक प्रस्तुति की गई है जो राजा रत्नसेन की विरह पीड़ा में दग्ध है।

व्याख्या :-

राजा रत्नसेन पद्मावती की खोज में चले गये हैं और पद्मावती का उनके विरह में अत्यन्त मार्मिक दशा हो चली है।

जेठ का समय है और गर्मी की ऋतु अपने चरम पर है, ऐसा लग रहा है कि

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

ये गर्म हवाएँ चारों ओर आग लगा देंगी।

विरह की अग्नि ऐसी है कि मानो यमुना नदी भी जलकर कोयला हो गई है। बार-बार विरह की आँधी उठ रही है। विरह से नागमती का शरीर पूरी तरह सूख गया है। फिर भी विरह का कौआ अभी भी भूखा ही है।

आगे जायसी, नागमती की विरह पीड़ा को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि पर्वत, समुद्र बादल और चन्द्रमा भी ऐसी अग्नि को सहन नहीं कर सकते हैं जैसी विरह की अग्नि नागमती को लगी हुई है।

भावगत एवं काव्यगत सौन्दर्य :-

1. जायसी ने प्रेम की पीर को यह तमजोरीहार के माध्यम से अत्यन्त भी व्यक्त किया है।
2. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने नागमती के विरह वर्णन को हिन्दी साहित्य की अद्वितीय वस्तु कहा है।
3. भाषा ठेठ एवं माधुर्य पूर्ण अवधी है।
4. रूपक एवं उपमा अलंकार तथा व्यंजना शक्ति द्रष्टव्य है।

6/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) किसबी किसान कुछ बनिक भिखारी भाट
चाकर, चपल नट, चोर, चार चेटकी।
पेट को पढ़त, गुन गढ़त, चढ़त गिरि,
अटन गहन बन अहन अखेटकी।
ऊँचे नीचे करम धरम अधरम करि,
पेट ही को पचत बेचत बेटा बेटकी।

संदर्भ एवं प्रसंग :-

प्रस्तुत काव्यांश रामभक्ति धारा के शिरोमणि कवि संत तुलसीदास जी द्वारा रचित उत्तरकाण्ड के कवितावली से उद्धृत है।

तुलसीदास जी ने इस काव्यांश में मध्यकाल में पेट की भूख एवं उसके लिए विभिन्न व्यक्तियों द्वारा किये गये कार्यों का वर्णन बड़े ही मार्मिक ढंग से किया है।

व्याख्या :-

तुलसीदास जी पेट की भूख (आर्थिक समस्याओं) को विभिन्न ऊँच नीच कर्मों का आधार मानते हैं।

वे कहते हैं कि ये पेट की आवश्यकता ही है जिसके कारण किसान, कृषि कार्य में जी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

होड़ मेहनत करते हैं, तो वहीं भिखारी, भीख माँगते हैं और चोर-उचक्के चोरी करते हैं।

पेट की खातिर ही वे विभिन्न सही-गलत आचरणों का सहारा लेते हैं। तुलसीदास जी आगे बढ़ते हुए यहाँ तक कहते हैं कि पेट की भूख तो सम्बन्धों के आधार को भी छल जाती है।

काव्यगत एवं भावगत सौन्दर्य :-

1) तुलसीदास जी ने अन्यत्र भी पेट की आग को 'जंगल की आग' बताया है।
2) मध्यकाल में आर्थिक समस्याओं पर विचार तुलसी की लोकरंजक साहित्य की उत्कृष्टता को स्पष्ट करता है।
3) आधुनिक काल में नागार्जुन ने भी कई दिनों तक चूल्हा रोया के माध्यम से इन्हीं विचारों को रखा है।
4) भाषा माधुर्यपूर्ण अवधी है
5) अनुप्रास अलंकार दृष्टव्य है।

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) आए जोग सिखावन पाँड़े।
परमारथी पुरानन लादे ज्यों बनजारे टाँड़े।।
हमरी गति पति कमलनयन की जोग सिखै ते राँड़े।
कहौ मधुप, कैसे समायँगे एक म्यान दो खाँड़े।।
कहु षटपद, कैसे खैयतु है हाथि के संग गाँड़े।
काकी भूख गई बयारि भखि बिना दूध घृत भाँड़े।।
काहे को झाला लै मिलवत, कौन चोर तुम डाँड़े।
सूरदास तीनों नहिं उपजत धनिया धान कुम्हाँड़े।।

संदर्भ एवं प्रसंग :-

प्रस्तुत काव्यांश भक्तिकाव्यधारा के शिरोमणि कवि सूरदास जी द्वारा रचित एवं आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा संकलित 'भ्रमरगीतसार' से लिया गया है।

इस काव्यांश में गोपियाँ, उद्धव का परिहास करते हुए अपने कृष्ण प्रेम को व्यक्त करती हैं।

व्याख्या :-

गोपियाँ श्री कृष्ण की विरह पीड़ा से दग्ध हैं। उद्धव उन्हें योग की शिक्षा देने

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

का प्रयत्न कर रहे हैं। ऐसे में वे कहती हैं कि एक बड़ा ज्ञानी हमें योग सिखाने आया है।

लगता है कि यह बड़ा परमार्थ का कार्य करना चाहता है परन्तु हम तो कमलनयन अर्थात श्री कृष्ण के प्रेमपाश में आबद्ध हैं। वे कहती हैं कि हे भँवरे! बताओ भला एक म्यान में दो तलवारें कैसे रह सकती हैं?

इसी प्रकार गोपियाँ विभिन्न उपमाएँ देते हुए हाथी, मूरख, इत्यादि के माध्यम से यह सिद्ध करने का प्रयास करती हैं कि वे श्री कृष्ण को भूल नहीं सकती हैं और योग उनके लिए नहीं है।

काव्यगत एवं भावगत सौन्दर्य:-

(1) सूरदास ने गोपियों के तर्क को "आयो घोष बड़ो व्यापारी" के माध्यम से भी व्यक्त किया है।

(2) भाषा ब्रज, रूपक एवं उपमा अलंकार दृष्टव्य हैं।

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) 'शृंगार रस का ऐसा सुंदर उपालंभ-काव्य दूसरा नहीं है।' सूरदास के भ्रमरगीत के संदर्भ में इस कथन के औचित्य पर विचार कीजिए। 20

भक्तिकालीन कृष्ण काव्यधारा के कवियों में सूरदास का अद्वितीय स्थान है। उनका शृंगारपरक काव्य ब्रजभाषा की मोहिनी के साथ मिलकर एक आकर्षक, प्रेममय, संगीतमय अद्भुत संसार की रचना करता है।

सूरदास ने भ्रमरगीत में गोपियों के उद्धव के साथ संवाद को विरह की जैसी मार्मिकता के साथ प्रस्तुत किया है वह वियोग शृंगार में अति प्रभावपूर्ण है।

सूर का शृंगार एक निश्छल प्रेम की अभिव्यक्ति करता है। यह शरीरी एवं भोगवादी प्रेम से कोसों दूर भक्ति एवं प्रेम की ऐसी धारा है जो अव्यक्त देखने को नहीं मिलती है।

सूरदास की गोपियों ने प्रकृति को को तो अपने विरह का पूर्ण आलम्बन ही बना लिया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

वे कहती हैं –

"मधुकर तुम कत रहत हरे, विरह वियोग
श्याम सुन्दर के ठाढ़े क्यों न जरे,
तुम हो निलज, लाज नहि तुमको, फिरि
सिरि पुहुप धरे।"

प्रकृति का आलम्बन एवं उद्दीपन के रूप में अद्वितीय प्रयोग सूरदास जी ने अपने काव्य में किया है। आचार्य द्विवेदी उनके विषय में ठीक ही कहते हैं कि जब वे अपने काव्य की रचना करते हैं तो अलंकार शास्त्र उनके पीछे हाथ जोड़कर चलता है, उपमाओं की झड़ी लग जाती है, रूपकों की तो बाढ़ आ जाती है।

इसी तथ्य को यदि हम रीतिकालीन शृंगार काव्य से तुलना करें तो पाते हैं कि बिहारी के काव्य में भाषा का चमत्कार तो

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

तो दिख सकता है परन्तु वहाँ प्रेम भोगमूलक है जब कि सूर के प्रेम तो सीधी-साधी गोपियों को भक्तिमूलक निश्छल प्रेम है। वे उधव को कहती हैं कि —

"उधव मन न भये दस बीस
एक हुतो सो गयो श्याम संग, को अवराधे ईश।"

वियोग श्रृंगार की परम्परा में नागमती का वियोग वर्णन भी लिया जा सकता है परन्तु एक तो सूर की भाषा ब्रज है और दूसरे सूर के पास सीमित आलम्ब राधा, कृष्ण, गोपियाँ, वृन्दावन इत्यादि ही है। ऐसे में सूर की उपमा देने की अद्वितीय क्षमता उनके श्रृंगार रस को अनुपम बना देती है।

9/20

उत्तर में पूर्णता

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) कबीर के दर्शन पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

भक्तिकालीन संत कवियों में कबीर का श्रेष्ठ स्थान है। वे अपने अक्खड़पन एवं साफगोई के लिए जितना प्रसिद्ध हैं, उनका दर्शन भी उतना ही संश्लिष्ट है।

कबीर पर कई दर्शनों का प्रभाव देखा जा सकता है, जिसमें से सबसे प्रमुख नाथ परम्परा का प्रभाव माना जाता है।

नाथ परम्परा से होने के कारण कबीर को अक्खड़पन विरासत में मिला था। वे गुरु की महिमा, षट्चक्रभेदन, हठयोग इत्यादि में इसी परम्परा से दीक्षित हुए थे।

शंकर के अद्वैतवाद का प्रभाव भी कबीर पर दिखाई देता है। जब कबीर "जल में कुंभ कुंभ में जल" को व्याख्यित करते हैं तो उनके निराकार ब्रह्म में आस्था को आसानी से

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

देखा जा सकता है। कबीर गर्व से घोषित करते हैं कि -

"बिछुड़े हैं जो प्यारे से, भटकते दर-बदर फिरते
हमारा यार है हममें, हमन को इंतजारी क्या।"

नाथों की संध्याभाषा भी कबीर प्रयोग करते हुए कहते हैं कि -

"कबीर दास की उल्टी बाणी बरसैगी कम्बल भीजैगा पानी।"

उत्तरोत्तर कबीर पर तत्कालीन भक्ति परम्परा का भी प्रभाव देखा जा सकता है। वे कहते हैं कि -

"पकरि टेक कबीर भगति की, काजी रहे झक मारि।"

यद्यपि कबीर सदैव निराकार ब्रह्म में ही विश्वास करते हैं और उनके राम निराकार, गुणातीत ब्रह्म ही हैं। वे कहते हैं कि सतगुरु की कृपा से

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ही वे आत्मसाक्षात्कार कर सके है -

"सतगुरु हमस रीझकर कह्या एक परसंग
बरस्या बादर प्रेम का, भीज गया सब अंग।"

कबीर का दर्शन एक समन्वयवादी दर्शन है जिस पर नाथ, अद्वैतवाद एवं भक्ति का प्रभाव दिखाई देता है। आचार्य द्विवेदी ने ठीक ही कहा है कि "कबीर की वाणी वह लता है जो भक्ति के क्षेत्र में योग का बीज पड़ने से विकसित हुई है।"

7/15

और उदाहरणों/ मॉडल उत्तर देखें

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) क्या 'भ्रमरगीतसार' को निर्गुण मत पर सगुण मत की विजय का काव्य मानना उचित है? तार्किक उत्तर दीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सूरदास जी कृष्ण भक्ति काव्य धारा के शिरोमणि कवि हैं। उनके द्वारा रचित एवं रामचन्द्र शुक्ल द्वारा संकलित भ्रमरगीत सार सगुण भक्ति धारा की अद्वितीय वस्तु है।

भ्रमरगीत सार मूलत: उधव एवं गोपियों का संवाद है। कृष्ण के विरह से दग्ध गोपियाँ सगुण कृष्ण की आसक्त हैं। वे नीरस, बोझिल निर्गुण, निराकार ब्रह्म को समझना ही नहीं चाहती है।

सूर ने इसी संवाद का सहारा लेकर सगुण मत की श्रेष्ठता को स्थापित किया है। गोपियाँ निर्गुण मत के प्रस्तावक उधव को व्यापारी बताते हुए कहती हैं कि -

"आयो घोष बड़ो व्यापारी,
लाये खेप गुण, ज्ञान जोग की, ब्रज में आन उतारी।"

जब-जब उधव यह प्रयास करते हैं कि

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

वे निर्गुण ब्रह्म की सत्ता एवं उपासना का महत्व गोपियों को समझा सके तब हर बार गोपियाँ अपने अकाट्य तर्कों से उन्हें परास्त कर देती हैं। ऐसा ही एक उद्धरण प्रस्तुत है:-

"उधो कोकिल कूजत कानन
तुम हमको उपदेश करत हो भस्म लगावत अंगन"

वस्तुतः सगुण भक्तिधारा के सहज, सरस एवं प्रेमयुक्त होने का लाभ निश्चित रूप से सूरदास को मिला। जहाँ एक ओर निराकार एवं निर्गुण ब्रह्म की उपासना का मार्ग कठिन था वहीं दूसरी ओर प्रेम एवं भक्ति का मार्ग सरल।

उपरोक्त विवेचना के आलोक में यह तो कहा ही जा सकता है कि भ्रमरगीत सार में सूर ने सगुण ब्रह्म की श्रेष्ठता कायम करने के प्रशंसनीय प्रयास किये हैं। जहाँ

8

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

प्रश्न श्रेष्ठता ~~कायम~~ स्थापित करने का है तो यह तो एक विषयवस्तु परक अवधारणा है परन्तु इसमें कोई संदेह नहीं है कि आमजन में सगुण भक्ति धारा की मान्यता अधिक रही है जिसमें भ्रमरगीत सार के गेय पदों की महत्वपूर्ण भूमिका है।

8½/15

ठीक है। मॉडल उत्तर भी देख लें

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'B'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके रचनात्मक-सौंदर्य का परिचय दीजिये: 10 × 5 = 50

(क) सचमुच कुछ प्रश्नों की सफलता इसी बात में होती है कि हम उस प्रश्न तक पहुँच गये हैं। उस प्रश्न का उत्तर भी हो, इसकी अपेक्षा वहीं नहीं रहती। दूसरे शब्दों में, ऐसे प्रश्न का सही उत्तर यही होता है कि यह जिज्ञासु भाव लेकर हम जीवन की ओर लौट आयें और उसे जिज्ञासुवत् हो जियें।

व्याख्या =>

लेखक कहता है कि प्रश्न की वास्तविक सत्ता यह होती है कि वह कितनी जिज्ञासा उत्पन्न करता है। उत्तर तो एक प्रक्रिया है, जिसमें समय भी लग सकता है परन्तु प्रश्न की जिज्ञासा उत्पन्न हुई यह भी एक महत्वपूर्ण तथ्य है।

1/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) बौद्धों का निर्वाण, योगियों की समाधि और पागलों की सी सम्पूर्ण विस्मृति मुझे एक साथ चाहिये। चेतना कहती है कि तू राजा है, और उत्तर में जैसे कोई कहता है कि तू खिलौना है- उसी खिलवाड़ी वटपत्रशायी बालक के हाथों का खिलौना है। तेरा मुकुट श्रमजीवी की टोकरी से भी तुच्छ है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ एवं प्रसंग

प्रस्तुत गद्यांश हिन्दी साहित्य के मूर्धन्य नाटककार जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित नाटक 'स्कन्दगुप्त' से लिया गया है।

प्रस्तुत पंक्तियों में स्कन्दगुप्त द्वारा अधिकारसुख की सारहीनता को प्रकट करते हुए अभिव्यक्त पंक्तियाँ कहता है।

व्याख्या :-

स्कन्दगुप्त राज-पाट की इच्छा से इर एक शांति की तलाश में है। वह इसे बंधनस्वरूप देखता है। उसे बौद्धों का निर्वाण, योगियों की समाधि और पागलों की सम्पूर्ण विस्मृति की लालसा है।

वह सोचता है कि अधिकार और सत्ता

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

तो व्यक्ति को कमजोर, बन्धनयुक्त और लोलुप बना देती है। वह राजमुकुट को सम्मान नहीं भार के रूप में देखता है।

वस्तुतः स्कन्दगुप्त बन्धनहीन, शांतिप्रिय, समरसतावादी जीवन की तलाश में है।

विशेष :-

① प्रसाद की समरसतावादी दृष्टि की विवेचना हुई है।

② प्रसाद अन्यत्र भी "अधिकार सुख कितना मादक और सारहीन है" के माध्यम से श्रद्धा, क्रिया एवं ज्ञान के समावेश पर बल देते हैं।

③ भाषा तत्सम प्रधान किंतु प्रवाहपूर्ण है।

④ सूत्र शैली "बौद्धों का निर्वाण....." में व्यक्त हुई है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) गाँव की भीड़ बड़ी हुलसकर देख रही है यह सब दृश्य। दा साहब के इस बड़प्पन के आगे सभी नतमस्तक हो आए हैं। बड़े-बूढ़ों को तो शबरी और निषाद की कथाएँ याद हो आईं। किसी-किसी को ईर्ष्या भी हो रही है हीरा से। बेटे तो जाने कितनों के मरते हैं–पर ऐसा मान?

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ एवं प्रसंग :-

प्रस्तुत गद्यांश मन्नू भण्डारी जी द्वारा लिखित प्रसिद्ध राजनीतिक उपन्यास 'महाभोज' से उद्धृत है।

इन पंक्तियों में दा साहब, बिशु की मृत्यु के बाद एक चुनावी रैली के दौरान उसके घर जाते हैं। इस समय गाँव वालों की मनोदशा का विवरण दिया गया है।

व्याख्या :-

बिशु की मृत्यु का मुद्दा अत्यन्त राजनीतिक रूप ले चुका था और दा साहब इस मुद्दे को राजनीतिक रंग देकर इसका पूर्ण लाभ उठाना चाहते हैं।

वे बिशु के पिता को कार में बिठाते हैं,

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

उसे पर्याप्त सम्मान देते हैं, ऐसा नजारा भीड़ भरी उत्सुकता युक्त आदर के साथ देख रही है।

गांव वाले अभिभूत हो गये हैं कि दा साहब ने इतना सम्मान हीरा को दिया ये तो राम चन्द्र ही थे जिन्होंने शबरी और निषाद को भी गले से लगाया था, तो वहीं कुछ गांव वाले ईर्ष्या भी कर रहे हैं कि बेटे के मरने पर इतना सम्मान। वस्तुतः यहां लेखक ने व्यंग्य को पूर्ण सम्यता से उभारा है।

विशेष :-

(1) महाभोज में राजनीतिक विद्रूपता एवं अवसरवादिता को अत्यन्त उत्कृष्टता से प्रकट करता है।

(2) मन्नू भण्डारी ने सहज एवं प्रवाहपूर्ण व्यंग्यात्मक भाषा का प्रयोग किया है।

(3) विराम चिन्हों का सुन्दर प्रयोग द्रष्टव्य है।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(घ) मुझे बार-बार अनुभव होता कि मैंने प्रभुता और सुविधा के मोह में पड़कर उस क्षेत्र में अनधिकार प्रवेश किया है, और जिस विशाल में मुझे रहना चाहिये था उससे दूर हट आया हूँ। जब भी मेरी आँखें दूर तक फैली क्षितिज रेखा पर पड़तीं, तभी यह अनुभूति मुझे सालती कि मैं उस विशाल से दूर हट आया हूँ।

संदर्भ एवं प्रसंग :-

प्रस्तुत गद्यांश नवलेखन के दौर में लिखे गये प्रसिद्ध नाटक "आषाढ़ का एक दिन" से लिया गया है। इसके लेखक मोहन राकेश जी हैं।

प्रस्तुत गद्यांश नाटक के तृतीय अंक से लिया गया है जहाँ कालिदास कश्मीर से लौटकर मल्लिका को अपने स्वत्व से दूर होने एवं अपने व्यक्तित्व के अजनबीपन एवं विखण्डन के बारे में बता रहा है।

व्याख्या :-

कालिदास, मल्लिका से कहता है कि उसे प्रायः यह अनुभव होता रहा है कि राजाश्रय

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

स्वीकार करके वह अपनी मूल प्रवृत्ति से दूर होता गया है। वह एक ऐसे कोल में प्रवेश कर गया जो उसका था ही नहीं।

वस्तुतः यह अस्तित्ववादी विचारधारा के उस प्रभाव को व्यक्त करता है जिसमें मनुष्य क्या है और क्या होना चाहिए के बीच अपने मूल प्रवृत्ति से ही कट जाता है, कालिदास की मनःस्थिति इस समय वही है।

विशेष :—

(1) राकेश जी के नाटकों के व्यक्तित्व के अन्तर्द्वंद्व, संत्रास, एवं अस्तित्ववादी विचारधारा के निर्णय की भूमिका इन पंक्तियों में भी दृष्टव्य है।

(2) भाषा तत्समयुक्त किन्तु प्रवाहपूर्ण व सरल है।

(3) विराम चिन्हों का सुन्दर उपयोग लम्बे स्वगतकथन को भी रोचक बनाये हुए है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) 'दर्शन में प्रसाद की गहरी अभिरुचि थी जिसे उन्होंने अपनी रचनाओं में घुला दिया है।' इस कथन के आलोक में 'स्कंदगुप्त' नाटक की दार्शनिक भंगिमा पर विचार कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

स्कन्दगुप्त नाटक में प्रसाद के प्रसादान्त के दर्शन होते हैं। वस्तुतः प्रसाद शैवाद्वैतवाद के दर्शन से प्रभावित रहे हैं।

इसके साथ ही प्रसाद ज्ञान, इच्छा एवं क्रिया की समरसता पर बल देते रहे हैं।

स्कन्दगुप्त में भी प्रसाद की उपरोक्त दर्शन दृष्टि सर्वत्र दिखाई देती है। स्कन्दगुप्त कहता है कि "अधिकार सुख कितना मादक और सारहीन है।"

तो वहीं प्रसाद ब्राह्मण-बौद्ध संघर्ष के माध्यम से अनात्मवाद एवं परमाणुवाद

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

की संकल्पना को बल देते हैं।

सर्वाधिक महत्वपूर्ण उदाहरण तो रचना के अंत में दिखता है जब स्कन्दगुप्त सब कुछ प्राप्त करके भी सुखी नहीं रहता है। वह स्वयं के लिए हतभाग्य का प्रयोग कर यह व्यक्त करता है।

वस्तुतः यही अंत प्रसाद के दर्शन का चरम है जो कामायनी में भी व्यक्त हुआ है और प्रसादांत के रूप में विख्यात है।

a महत्वपूर्ण लेख।

6/20

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक पर अस्तित्ववादी दर्शन के प्रभाव की विवेचना कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

'आषाढ़ का एक दिन' नाटक मोहन राकेश द्वारा रचित है। इस नाटक पर अस्तित्ववादी विचारधारा के कई प्रभाव देखे जा सकते हैं।

सार्त्र एवं कामू द्वारा विवेचित इस विचारधारा में निर्णय की स्वतन्त्रता को प्रमुख महत्ता दी गयी है। व्यक्ति का एक गलत निर्णय उसे आत्मनिर्वासन का शिकार बना देता है।

यही कालिदास के साथ होता है। उसका राजाश्रय लेने का निर्णय अंततः उसके व्यक्तित्व की विखण्डन एवं अजनबीपन अकेलेपन का कारण बन जाता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

अस्तित्ववादी विचार धारा मानती है कि जीवन कैसा है और कैसा होना चाहिए यह व्यक्ति के अजनबीपन का कारण है। जीवन में निर्णय कैसे भी लिये जाये वे अधूरेपन की ओर ले जाते हैं।

नाटक में मल्लिका, विलोम, कालिदास सभी अधूरेपन एवं अजनबीपन के शिकार हैं।

संक्षेपतः यह कहा जा सकता है कि नाटक पर अस्तित्ववादी विचारधारा का गंभीर प्रभाव है।

और बेहतर बनाएँ

7½/15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'भारत-दुर्दशा' नाटक की रंगमंचीयता पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'भारत दुर्दशा' नाटक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का प्रसिद्ध नाटक है जो न केवल कथ्यवस्तु बल्कि रंगमंचीयता की दृष्टि से भी प्रसिद्ध है।

भारत दुर्दशा में भाषा की सरसता इसकी रंगमंचीयता को बढ़ाती है। इसमें कुल अंक 6 हैं एवं दृश्य भी 6 ही हैं जिससे कि इसके मंचन में बार-बार दृश्य विधान बदलने की समस्या नहीं आती है।

रंगमंच संकेत भी भारतेन्दु द्वारा कुछ स्थानों पर दिये गये हैं जिससे कि दुविधा की स्थिति नहीं रहती है। हाँ यह अवश्य है की इस नाटक में गीतों की अधिकता है जो संभवतः इसे थोड़ा लम्बा बनाती है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पात्रों द्वारा स्वयं का लम्बा परिचय देना थोड़ा बोझिल करता है यथा अंधकार द्वारा परन्तु यदि इस दृष्टि से विचार किया जाये कि नाटक को 2 घंटे में खेला जा सकता है एवं कोई अवान्तर कथा विकसित हुए बिना सभी पात्र अपनी बात कह जाते हैं तो यह भी इस नाटक का एक विशिष्ट गुण ही माना जायेगा।

वस्तुतः भारतेन्दु ने स्वयं इस नाटक को कईबार सफलतापूर्वक खेला है। इब्राहिम अल्काजी समेत अनेक निर्देशकों ने इसका कुशल मंचन किया है, अतः रंगमंचीयता की दृष्टि से यह एक सफल नाटक है।

6/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) 'आषाढ़ का एक दिन' शीर्षक की सार्थकता पर विचार कीजिये। क्या आप इस नाटक का इससे बेहतर नाम प्रस्तावित कर सकते हैं? 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'आषाढ़ का एक दिन' नाटक मोहन राकेश जी के द्वारा 1958 में लिखा गया था। यह नाटक मोहन राकेश के अन्य नाटकों की भाँति अस्तित्ववादी विचारधारा से प्रभावित है।

आषाढ़ का एक दिन नाटक के शीर्षक की सार्थकता पर विचार करते समय यह देखना महत्वपूर्ण है कि क्या शीर्षक नाटक की मूल वस्तु को व्यक्त कर रहा है? क्या इससे बेहतर शीर्षक दिया जा सकता था? यदि दिया जा सकता था तो वह क्या होता?

पहले प्रश्न के उत्तर पर विचार करते समय यह तथ्य उभर कर आते हैं कि यह नाटक मूलतः अस्तित्ववादी विचारधारा से प्रभावित है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

जो कि परिस्थितियों को व्यक्तियों से ऊँचा माना है। सम्पूर्ण नाटक ही परिस्थितियों की देन है। कालिदास का राजाश्रय स्वीकार करना, मल्लिका का वारांगना बनना सब कुछ।

दूसरी बात यह है कि यह एक स्थिति प्रधान नाटक है। इसका कोई भी चरित्र इतना औदात्य से युक्त नहीं है कि वह चरित्र प्रधान हो सके, हां मल्लिका में औदात्य अवश्य है परन्तु वह मुख्य नायिका तक ही सीमित है।

अब यदि दूसरे प्रश्न पर विचार करें तो बेहतर शीर्षक चरित्र मूलक यथा 'कालिदास', 'मल्लिका' इत्यादि हो सकता था परन्तु सम्पूर्ण नाटक में कई पात्र महत्वपूर्ण हैं। फिर नाटक में परिस्थितियाँ, चरित्रों से ज्यादा महत्वपूर्ण है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

तीसरे प्रश्न के उत्तर में स्वयं "आषाढ़ का एक दिन" शीर्षक आ जाता है। यदि कालिदास का गमन, मल्लिका का त्याग सहित अन्य स्थितिपरक शीर्षकों को लेते हैं तो यह सम्पूर्ण नाटक के परिस्थितियों के कुछ अंश ही होंगे।

इस नाटक का बेहतर नाम मेरे विचार से आषाढ़ का एक दिन ही है क्योंकि जिस प्रकार प्रारम्भ एवं अन्त में मेघों के गर्जन से प्रतीकात्मक छवि निर्मित हुई है वह सम्भवतः किसी अन्य शीर्षक से प्रभावी रूप से व्यक्त नहीं हो सकती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक में इतिहास और कल्पना के समन्वय पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आषाढ़ का एक दिन नाटक में इतिहास एवं कल्पना के समन्वय का प्रश्न एक कौतूहल उत्पन्न करता है।

नाटक का प्रमुख पात्र कालिदास एक ऐतिहासिक चरित्र है। उसके द्वारा रचित ग्रन्थों के नाम मेघदूत, कुमारसम्भव भी ऐतिहासिक है।

मोहन राकेश जी का इस सम्बन्ध में स्पष्ट मानना है कि उन्होंने सिर्फ एक ऐतिहासिक चरित्र इसलिए उठाया है जिससे पाठक को इस चरित्र को सहजता से आत्मसात कर सके। वे मानते हैं कि वस्तुतः उनका उद्देश्य व्यक्तित्व का अन्तर्द्वन्द्व, अपने मूल प्रकृति के कट जाने का प्रस्तुतिकरण है। ऐसे में वे यदि ऐसा ऐतिहासिक चरित्र उठाते हैं जो

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जनमानस में पहले से प्रचलित है तो वे आसानी से अपनी बात रख सकेंगे।

यदि नाटक के अन्य तत्वों को देखें तो कालिदास, उज्जयिनी एवं काश्मीर के वर्णन के अतिरिक्त अन्य पात्र काल्पनिक है। मल्लिका, मातुल, अम्बिका ये सभी काल्पनिक हैं।

वस्तुतः यह नाटक कल्पना के आवरण में ऐतिहासिक रंग भरकर अस्तित्ववाद के व्यक्तित्व विखण्डन, अजनबीपन, अकेलेपन को प्रस्तुत करता है। इतिहास का आधार तो मात्र पाठक को उस मनःस्थिति तक आसानी से पहुँचा देता है जिसका लेखक प्रयास कर रहा है।

संक्षेपतः यह कहा जा सकता है कि राकेश जी ने ऐतिहासिक संकेतों के आधार पर एक

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

काल्पनिक धरातल का निर्माण कर आधुनिक मानव की समस्या को आधार बनाते हुए इस नाटक की रचना की है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) क्या भारत-दुर्दशा को एक त्रासदी माना जा सकता है? तर्कपुष्ट उत्तर दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भारत दुर्दशा', भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा रचित प्रसिद्ध नाटक है जो नवजागरणकालीन प्रवृत्तियों के पोषण के माध्यम से भारतीय जनमानस को जगाने का उद्देश्य रखती है।

भारत दुर्दशा को त्रासदी मानने के पीछे भारतीय एवं पश्चिमी परम्पराओं की तुलना करना बेहतर है।

पश्चिमी परम्परा में नायक का औदात्य होना, संयमी, उच्च-चरित्र, कुल एवं साहसशील होना, उसका अति नैतिक होने के कारण गंभीर भूल 'हैमार्शिया' कर देना तथा कथानक का वक्र होना के साथ ही अंत में 'विरेचन' की स्थिति उत्पन्न होना ट्रैजेडी के मुख्य तत्व माने जाते हैं।

भारत दुर्दशा का नायक भारत न तो उदात्त है और न ही साहसी। वह तो

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

खलनायक भारत दुर्दैव की चीख सुनकर ही मूर्छित हो जाता है।

भारत इतना कमजोर है कि वह युद्ध करने की स्थिति में ही नहीं है तो नैतिक भूल करने का तो प्रश्न ही नहीं उठता है। इसी प्रकार कथा में कोई द्वन्द्व या वक्रता नहीं है वह सीधी है। हाँ भारत के अन्तिम अंक में न उठने से कुछ दुःख अवश्य होता है परन्तु उससे 'विरेचन' जैसा कोई प्रभाव नहीं होता है क्योंकि यह अपेक्षित ही था।

वस्तुतः भारतेन्दु के पूर्व न तो ट्रैजेडी लिखने की परम्परा थी और न ही वे ट्रैजेडी लिखना चाहते थे। फिर भी नाटक के कुछ तत्वों के आधार पर इसे ट्रैजेडी के समीप तो माना ही जा सकता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation